WORLD खबर EXPRESS

WORLD
खबर एक्सप्रेस

रविवार 30 अक्टूबर 2022 | अंक - 286

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

www.twitter.com/worldkhabarexpress www.facebook.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress MID DAY E-PA

Near- Uttam Palace Kanpur Nagar

फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत

द्वितीय पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा केंद्र पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय(30 अक्टूबर से 03 नवंबर 2022) कृषक प्रशिक्षण का द्वितीय बैच का आयोजन किया गया। जिसमें केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि किसान भाई पराली को खेतों में मिलाएं तथा खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं एवं अपनी पराली में बिल्कुल भी आग न लगाएं । जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता है एवं आवश्यक पोषक तत्वों का नुकसान होता है। इस अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि फसल अवशेष हमारे खेतों के लिए भोजन का काम करते है। जो खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ उस में उत्पादित उपज की गुणवत्ता को भी बढ़ाते है। इसी क्रम में वैज्ञानिक डॉक्टर विनोद प्रकाश द्वारा बताया गया कि फसल अवशेष प्रबंधन की कई मशीनें है जो पराली को आसानी से खेत में मिला सकते है। उन्होंने बताया कि वेस्ट डी कंपोजर द्वारा फसल कम समय में पराली को सड़ा कर आगामी फसल बोई जा सकती है। यह मशीनें हैप्पी सीडर,सुपर सीडर एवं मल्चर आदि है। इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद के अनूपपुर, रुदापुर, [illegible] गांव के किसान प्रतिभाग कर रहे हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ राजप्रकाश ने किसानों को पराली न जलाने

एवं उससे खाद बनाने के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस कार्यक्रम में गौरव शुक्ला ने सभी किसानों का पंजीकरण कराया। इस अवसर पर प्रगतिशील कृषक जितेंद्र कुमार, महावीर, एवं विजय पाल सहित 25 कृषक प्रतिभाग कर रहे हैं।

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

मन की बात: पीएम मोदी ने दी छठ की बधाई... 12

जिले में छठ महापर्व की धूम, वीके सिंह ने श्रद्धालुओं... 10

जन एक्सप्रेस

लखनऊ | वर्ष: 14 | अंक: 20 | मूल्य: ₹3.00/- | पेज : 12

@janexpressnews | janexpresslive | janexpresslive | www.janexpresslive.com/epaper | सोमवार | 31 अक्टूबर, 2022

सीएसए ने धान की खेती पर एडवाइजरी जारी की

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार सिंह ने रविवार को धान की खेती पर एडवाइजरी जारी की। उन्होंने किसानों को बताया कि धान के फूलने व परिपक्वता के समय अधिक वर्षा, बादल रहने से धान में कंडुआ रोग का प्रकोप होने की काफी संभावना रहती है। इस आभासी कंडुआ रोग को हल्दी रोग या लाई फूटना भी कहते हैं। अस्टिलागोनाईडी वाइरेंस नामक फफूंद के कारण होने वाले इस रोग के पनपने का मौसम तब होता है जब आद्रता 96 फीसदी के आसपास तथा तापमान 25 से 35 डिग्री सेल्सियस हो। इस बीमारी का प्रभाव बालियों के किसी किसी दाने पर होता है। प्रभावित दाने आकार में काफी बड़े घुंघरुओं जैसे हो जाते हैं। रोगग्रस्त दानों के फूटने पर उनमें नारंगी रंग का पदार्थ दिखाई देता है, जो फफूंद होता है। शुरुआत में घुंघरू जैसी आकृति का रंग सफेद, फिर पीला व बाद में काला हो जाता है। इस रोग की रोकथाम के लिए प्रॉपिनाजोल 1 मिली / ली. पानी की दर से प्रयोग करें तथा रोग से ग्रस्त फसल में नत्रजन का कदापि प्रयोग न करें।

लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

कार्तिक शुक्ल पक्ष, सप्तमी 1.11 उपरांत अष्टमी विक्रम संवत 2079

अमृत विचार

वर्ष 1, अंक 67, पृष्ठ 16, मूल्यः 5 रुपये

एक सम्पूर्ण अखबार

कानपुर, सोमवार, 31 अक्टूबर 2022

www.amritvichar.com

ने 13 साल बाद भारत को हराया...15

स्त्री-2 में भी काम करेंगी अ

प्रयोग सीएसए की विशेषज्ञ ने किया कमाल, पौष्टिकता से भरपूर दूध तैयार और पोषक तत्व है भरपूर

अब खोया छोड़ लोबिया से बनाएं बर्फी, लड्डू-पेड़े

अमृत विचार, कानपुर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञ लोबिया, सोयाबीन समेत अन्य फसलों से कई तरह की मिठाइयां तैयार कर रहे हैं। यह स्वाद के साथ ही पौष्टिकता से भरपूर हैं। अब तक लड्डू, बर्फी, पेड़े और तिल, गुड़, काजू को मिलाकर कई मीठे व्यंजन बनाए जा चुके हैं। छेना और क्रीम वाली मिठाई का ट्रायल चल रहा है। यह सभी लोबिया के दूध से तैयार हुई हैं। इस विधि को पेटेंट कराया जा रहा है। कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने विशेषज्ञ और उनकी टीम को बधाई दी है। विश्वविद्यालय के कॉलेज ऑफ कम्यूनिटी साइंस विभाग की डॉ. सीमा सोनकर ने लोबिया की पौष्टिकता को देखते हुए उसका दूध तैयार किया। इस दूध से पनीर बना, जिस पर टेस्टिंग हुई।

आयरन से है भरपूर

विशेषज्ञ के अनुसार गाय और भैंस के दूध के मुकाबले में लोबिया में फोलिक एसिड, आयरन और प्रोटीन की मात्रा अधिक है। यह उन क्षेत्रों के लिए सही है, जहां सामान्य दूध आसानी से उपलब्ध नहीं है। पांच साल से अधिक आयु के लोग इसका सेवन कर सकते हैं।

फैकल्टी बेहतर कर रही कार्य

लोबिया से तैयार दूध, पनीर और मिठाइयां स्वाद के साथ ही सेहतभरे हैं। कई तरह के पौष्टिक पदार्थ मिल सकेंगे। विधि को पेटेंट कराया जाएगा, जिससे स्टार्टअप कराने की प्लानिंग है। कई फैकल्टी बेहतर शोध कार्य कर रही है। -डॉ. डीआर सिंह, कुलपति

200 ग्राम से 700 मिली लीटर दूध

डॉ. सीमा ने बताया कि 200 ग्राम लोबिया से 700 मिलीलीटर दूध तैयार होता है। सबसे पहले लोबिया को रातभर पानी में भिगोया जाता है। सुबह लोबिया को अच्छी तरह से साफ करते हैं। इसके बाद 500 मिलीमीटर पानी मिलाकर मिक्सी में पीसते हैं। पेस्ट को पनीर बनाने की विधि की तरह से कपड़े में बांधकर रखते हैं। यह प्रक्रिया तीन से चार बार की जाती है। नीचे बचा द्रव्य दूध होता है, जबकि बाकी बचे मिश्रण को मिठाई के रूप में या फिर दलिया और हलुआ के रूप में खा सकते हैं।

अमर उजाला कानपुर 31/10/2022

किसान नई फसलें बोकर बढ़ाएं आमदनी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) दलीप नगर में चल रहे फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का रविवार को समापन हुआ। मुख्य अतिथि सीएसए के सह निदेशक प्रसार डॉ. पीके राठी ने किसानों से कहा कि गांव में मधुमक्खी पालन, गोपालन, बीज उत्पादन, केले की खेती, ड्रैगन फ्रूट आदि नवीनतम फसलों को बोकर आमदनी बढ़ाएं। मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने कहा कि फसल के अवशेष का प्रयोग अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए कर सकते हैं। इस मौके पर डॉ. राम प्रकाश, डॉ. अरुण कुमार सिंह, डॉ. एसएल वर्मा, डॉ. अजय कुमार सिंह, डॉ. शशिकांत, डॉ. निमिषा अवस्थी आदि मौजूद रहीं। (संवाद)

फसल अवशेष प्रबंधन योजना की ओर से पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ

प्रशिक्षण लेते कृषक।

कानपुर, 30 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा केंद्र पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय(30 अक्टूबर से 03 नवंबर 2022) कृषक प्रशिक्षण का द्वितीय बैच का आयोजन किया गया। जिसमें केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि किसान भाई पराली को खेतों में मिलाएं तथा खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं एवं अपनी पराली में बिल्कुल भी आग न लगाएं। जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता है एवं आवश्यक पोषक तत्वों का नुकसान होता है।इस अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि फसल अवशेष हमारे खेतों के लिए भोजन का काम करते हैं। जो खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ उस में उत्पादित उपज की गुणवत्ता को भी बढ़ाते हैं। इसी क्रम में वैज्ञानिक डॉक्टर विनोद प्रकाश द्वारा बताया गया कि फसल अवशेष प्रबंधन की कई मशीनें हैं जो पराली को आसानी से खेत में मिला सकते हैं। उन्होंने बताया कि वेस्ट डी कंपोजर द्वारा फसल कम समय में पराली को सड़ा कर आगामी फसल बोई जा सकती है। यह मशीनें हैप्पी सीडर,सुपर सीडर एवं मल्चर आदि है। इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद के अनूपपुर, रुदापुर, सहतावनपुरवा गांव के किसान प्रतिभाग कर रहे हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ रामप्रकाश ने किसानों को पराली न जलाने एवं उससे खाद बनाने के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस कार्यक्रम में गौरव शुक्ला ने सभी किसानों का पंजीकरण कराया। इस अवसर पर प्रगतिशील कृषक जितेंद्र कुमार, महाबीर, एवं विजय पाल सहित 25 कृषक प्रतिभाग कर रहे हैं।

rashtriyaswaroop1@gmai.com

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 14 अंक : 119 कानपुर, सोमवार 31 अक्टूबर 2022 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य: 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

yaswaroop.in

मिलर-मार्करम की जोड़ी ने प्रोटियाज को जीत दिलाई 10

धान का आभासी कंडुवा रोग पर जारी की एडवाइजरी

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि धान के फूलने व परिपक्वता के समय अधिक वर्षा बादल रहने से धान में कंडुआ रोग का प्रकोप होने की काफी संभावना रहती है।आभासी कंडुआ रोग को हल्दी रोग भी कहते हैं कंही कंही इसे लाई फूटना भी कहते हैं।यह रोग अस्टिलागोनाईडी वाइरेंस नामक फफूंद के कारण होता है।धान फूलने के समय अगर मौसम में आद्रता 96त्न के आसपास वह तापमान 25 से 35 डिग्री सेल्सियस है तो यह रोग पनपने का सर्वानुकूल मौसम है। इस बीमारी के प्रभाव बालियों पर किसी किसी दाने पर होता है, प्रभावित दाने आकार में काफी बड़े घुंघरुओं जैसे होते हैं उन्होंने बताया कि रोगग्रस्त दानों के फूटने पर उनमें नारंगी रंग का पदार्थ दिखाई देता

है. जो की फफूंद होता है. शुरुआत में घुंघरू जैसी आकृति का रंग सफेद, फिर पीला, व बाद में काला हो जाता है. ।एक अनुमान के अनुसार इस रोग द्वारा फसल को होने वाला नुकसान 5-49 प्रतिशत तक होता है.इस रोग की रोकथाम के लिए बताया अगर यह समस्या आती है तो प्रॉपिनाजोल 1 मिली / ली0 पानी की दर से प्रयोग करें. उन्होंने बताया कि इस रोग से ग्रस्त फसल में नत्रजन का कदापि प्रयोग न करें। हमेशा प्रमाणित बीजो की ही नर्सरी लगाएं व बीजोपचार करके ही बीज बोयें।

धान का आभासी कंडुवा रोग पर जारी की एडवाइजरी

कानपुर, 30 अक्टूबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ अजय कुमार सिंह ने किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है उन्होंने बताया कि धान के फूलने व परिपक्वता के समय अधिक वर्षा बादल रहने से धान में कंडुआ रोग का प्रकोप होने की काफी संभावना रहती है.आभासी कंडुआ रोग को हल्दी रोग भी कहते हैं, कंही कंही इसे लाई फूटना भी कहते हैं।यह रोग अस्टिलागोनाईडी वाइरेंस नामक फफूंद के कारण होता है। धान फूलने के समय अगर मौसम में आद्रता 96त्न के आसपास वह तापमान 25 से 35 डिग्री सेल्सियस है तो यह रोग पनपने का सर्वानुकूल मौसम है। इस बीमारी के प्रभाव बालियों पर किसी किसी दाने पर होता है, प्रभावित दाने आकार में काफी बड़े घुंघरुओं जैसे होते हैं उन्होंने बताया कि रोगग्रस्त दानों के फूटने पर उनमें नारंगी रंग का पदार्थ दिखाई देता है. जो की फफूंद होता है. शुरुआत में घुंघरू जैसी आकृति का रंग सफेद, फिर पीला, व बाद में काला हो जाता है.।एक अनुमान के अनुसार इस रोग द्वारा फसल को होने वाला नुकसान 5-49 प्रतिशत तक होता है.इस रोग की रोकथाम के लिए बताया अगर यह समस्या आती है तो प्रॉपिनाजोल 1 मिली / ली0 पानी की दर से प्रयोग करें. उन्होंने बताया कि इस रोग से ग्रस्त फसल में नत्रजन का कदापि प्रयोग न करें। हमेशा प्रमाणित बीजो की ही नर्सरी लगाएं व बीजोपचार करके ही बीज बोयें।

चेयरमैन तिलक अस्थाना वित्तीय वर्ष 2021-22 का वार्षिक लेखा प्रस्तुत किया।

हिंदुस्तान कानपुर 31/10/2022

धान पर कंडुवा रोग की संभावना, जारी की एडवाइजरी

कानपुर। धान की फसल पर कंडुवा रोग का हमला हो सकता है। इसको लेकर सीएसए के वैज्ञानिकों ने किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। विवि के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डॉ. अजय कुमार सिंह ने बताया कि धान के फूलने व परिपक्वता के समय अधिक वर्षा बादल रहने से कंडुआ रोग का प्रकोप होने की काफी संभावना रहती है। इस रोग में 5से 49 फीसदी तक नुकसान पहुंचता है।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:13 | अंक:253 | देहरादून, रविवार, 30 अक्टूबर, 2022 | पृष्ठ:08

द्वितीय पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण प्रारंभ

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा केंद्र पर फसल अवशेष प्रबंधन योजना अंतर्गत पांच दिवसीय(30 अक्टूबर से 03 नवंबर 2022) कृषक प्रशिक्षण का द्वितीय बैच का आयोजन किया गया जिसमें केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने कृषकों को बताया कि किसान भाई पराली को खेतों में मिलाएं तथा खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाएं एवं अपनी पराली में बिल्कुल भी आग न लगाएं जिससे पर्यावरण प्रदूषित होता है एवं आवश्यक पोषक तत्वों का नुकसान होता है।

इस अवसर पर डॉ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि फसल अवशेष हमारे खेतों के लिए भोजन का काम करते हैं। जो खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के साथ–साथ उस में उत्पादित उपज की गुणवत्ता को भी बढ़ाते हैं। इसी क्रम में वैज्ञानिक डॉक्टर विनोद प्रकाश द्वारा बताया गया कि फसल अवशेष प्रबंधन की कई मशीनें हैं जो पराली को आसानी से खेत में मिला सकते हैं। उन्होंने बताया कि वेस्ट डी कंपोजर द्वारा फसल कम समय में पराली को सड़ा कर आगामी फसल बोई जा सकती है यह मशीनें हैप्पी सीडर,सुपर सीडर एवं मल्चर आदि है इस पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में जनपद के अनूपपुर, रुदापुर, सहतावनपुरवा गांव के किसान प्रतिभाग कर रहे हैं इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ रामप्रकाश ने किसानों को पराली न जलाने एवं उससे खाद बनाने के बारे में विस्तार से जानकारी दी इस कार्यक्रम में गौरव शुक्ला ने सभी किसानों का पंजीकरण कराया इस अवसर पर प्रगतिशील कृषक जितेंद्र कुमार, महाबीर, एवं विजय पाल सहित 25 कृषक प्रतिभाग कर रहे हैं।